द्विवेदी युग

NOTES NO-14
14-04-2020

डॉ० अनिरुद्ध सिंह
हिन्दी विभाग

स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा प्रथम वर्ष
हिन्दी साहित्य का इतिहास

कलकत्ता विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में लार्ड कर्जन ने मंच पर कहा था कि एशिया का इतना बड़ा देश अंधकार में डूबा हुआ है। इस देश के पास न तो कोई सभ्यता है, न कोई संस्कृति है, न इतिहास है, न परम्परा है। यह भालुओं, मदारियों और सन्यासियों का देश है और हम सभ्य लोगों पर इसकी जिम्मेदारी है कि जिस देश में इतने सारे मनुष्य आदिम युग में जी रहे हैं उन्हें सभ्यता की रोशनी दें। तो यह पता चल रहा था कि इस देश के बारे में साम्राज्यवाद का केन्द्र क्या सोच रहा है। तिलक के आने के बाद नरम दल हाशिये में था और एक उग्रता बढ़ रही थी, इसलिए जो सामाजिक माहौल भारतेन्दु युग में था वह राजनीतिक चेतना के प्रसार के कारण बदल रहा था। इसलिए इस समय की द्विवेदी युग की राजनीतिक चेतना ~~के प्रसार के कारण बदल रहा था~~ में अंग्रेजो के प्रति सहानुभूति का भाव उनके प्रति श्रेष्ठता बोध का भाव पूरी तरह से खत्म हो गया।

Scanned with CamScanner

1- <u>राष्ट्र-</u> इस गौरवमय अतीत के स्मरण के कुछ मनोवैज्ञानिक कारण है। वर्तमान बहुत दुर्दशाग्रस्त है, देश पराधीन है, कवि समाज चिंतक, राजनेता अनुभव करते हैं कि यूरोप के तेजस्वी ज्ञान की तुलना में हम बहुत पिछड़े हैं। हमारे सामाजिक संबंधों, रीति-रिवाजों में, स्त्री के प्रति दृष्टिकोण में बहुत पिछड़ापन है। इसलिए एक पिछड़े हुए समाज में आत्म गौरव का स्रोत इतिहास ही हो सकता है। वर्तमान के बेहद दुर्दशा और अंधकार में इन कवियों को इतिहास से ही उम्मीदें दिखाई दे रही थी।

इतिहास एक मनोवैज्ञानिक सांत्वना देता है। इस मनोवैज्ञानिक सांत्वना के रूप में ही राष्ट्र गौरव की भावना को देखा जाना चाहिये। उसका आधार मनोवैज्ञानिक सांत्वना है। 'भारत भारती' इस युग की बहुत महत्त्वपूर्ण कृति है जिसमें राष्ट्र गौरव का अर्थ दिखाई देता है।

Scanned with CamScanner

2. राष्ट्रीयता का प्रबल स्वर-

एक स्तर पर तो यह है कि बहुत गौरवमयी अतीत है। ~~कई जगह पर यह~~ जिक्र भी आया है कि यूरोप को जब ठीक से छाल पहनना भी नहीं आ रहा था तब हमारें यहाँ उपनिषदों की रचना हो रही थी। तो यह एक ठोस बंध्यता है कि हम काफी मजबूत थे। इससे एक उर्जा देश को मिलती थी। भारत भारती के बारे में तो यह कहा जाता है कि हिन्दुस्तान में यह अपने जमाने की सबसे लोकप्रिय कृति थी। रामचरितमानस से भी ज्यादा। यह भारतीय मानस की जीभ पर चढ़ी हुई आधुनिक गीता थी। लोग इस किताब को जेल में भी साथ रखते थे और ऐसे लोगों की संख्या लाखों में थी जिन्हें भारत-भारती जबानी याद थी।

इस राष्ट्रीयता का एक और पक्ष है और वह है '<u>बलिदान भाव</u>'। देश के लिए मरा जा सकता है बिना सैनिक हुए। लेकिन राष्ट्र प्रेम का अर्थ था कि बलिदान का भाव उस युग चेतना में मौजूद था और कविता में राष्ट्र प्रेम का अर्थ था कि बलिदान का भाव उस युग की चेतना में मौजूद था और कविता

में राष्ट्र प्रेम का अर्थ था कि बलिदान की भावना को प्रोत्साहित किया जाये। इस संदर्भ में स्नेही की एक कविता है -

'देश भक्त वीरों, मरने से नेक नहीं डरना होगा।
प्राणों का बलिदान देश की वेदी पर करना होगा।'

इसी परम्परा में आगे चलकर माखनलाल चतुर्वेदी ने 'पुष्प की अभिलाषा' लिखी.

'नहीं चाहता सुर बाला के गहनों में गूंथा जाऊँ
मुझे तोड़ लेना बनमाली उस पथ पर देना तुम फेंक,
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ जावें वीर अनेक।'

यह जो बलिदान भावना है, यह उस समय की राष्ट्रीयता का एक बहुत जरूरी और अनिवार्य पक्ष है। राष्ट्रीयता किस तरह बदलती है आज़ादी के बाद राष्ट्रीयता का वही अर्थ नहीं है जो आज़ादी से पहले का है -

'हरा रंग है, हरी हमारी धरती की अंगड़ाई
कहता है यह चक्र हमारा कदम कभी न रुकेगा,
झण्डा ऊँचा सदा रहेगा।'

यह राष्ट्रीय आंदोलन और राष्ट्रीय भावना का गीत है।

Scanned with CamScanner

3- परम्परागत नैतिक बोध -

परम्परागत नैतिक बोध से इस युग की मूल्य चेतना का निर्माण हुआ है। और जो परम्परागत नैतिक बोध है वह आचरण की पवित्रता और ईमानदारी सेवा ऐसे प्रसंगों को तरजीह देता है। जैसे बाज़ारवादी व्यवस्था में सेवा का ही एक आर्थिक प्रयोजन है।

इस नैतिक बोध के अनुसार मनुष्य के पास कोई न कोई महाउद्देश्य रहना चाहिए। इसलिए द्विवेदी युग का मानवीय और सामाजिक मूल्य सफलता पर नहीं बल्कि सार्थकता की नींव पर खड़ा है। यह भी कहा जा सकता है कि सोद्देश्यता ही जीवन मूल्य है।

जो कविता का गुणधर्म है वही समाज का गुण धर्म हो सकता है। मैथिलीशरण गुप्त के शब्द हैं कि -

'केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए
उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए।'

यहाँ उपदेश नैतिक मूल्य है. नैतिक संस्कार है। यह इस युग की सामाजिक चेतना की बृहत्तर रूपरेखा है।

Scanned with CamScanner

4- नवजागरण की चेतना-

नवजागरण की चेतना द्विवेदी युग की चेतना का भी प्रधान स्वर है। नवजागरण की चेतना आत्म मंथन की चेतना है। नवजागरण आत्म-विश्लेषण की चेतना है और वर्तमान के बीच जो बहती हुई परम्परा है उस परम्परा की शक्तियाँ और सीमाओं को जानने की चेतना है। यह जो अतीत का मूल्यांकन है, नवजागरण की चेतना का एक स्वर है, वह द्विवेदी युगीन-चेतना का भी प्रधान स्वर है। इस दृष्टि से भारत-भारती की पंक्ति है -

'हम कौन थे क्या हो गए और क्या होंगे
अभी.
आओ मिलकर विचारें यह समस्याएं सभी।'

समग्रतः हिन्दी कविता के इतिहास में द्विवेदी युग का महत्व जीवन और कविता में एक नये रिश्ते के सूत्रधार के रूप में है। यह कविता भारतीय नवजागरण के सुधारवादी आंदोलन को रचनात्मक स्तर पर प्रस्तुत करती है। वैष्णवी पवित्रता और सांस्कृतिक मूल्य चेतना का निर्वाह करते हुए इस युग का कवि

Scanned with CamScanner

आधुनिक भावबोध के प्रति सजग दिखाई देता है।
मूल्य चेतना का निर्वाह करते हुए इस युग का कवि
आधुनिक भावबोध के प्रति सजग दिखाई देता है।
मूल्य चेतना की तरफ विशुद्ध भारतीय दृष्टि और रीतिकाल
के बहिष्कार में उसकी नयी दायित्व चेतना की झलक
दिखाई देती है। यद्यपि इस कविता पर इतिवृत्तात्मकता
और उपदेशात्मकता के आरोप लगाये गये हैं। लेकिन
उन सीमाओं को पूर्वाग्रहों से नहीं इतिहास के विवेक
से देखा जाना चाहिए। साहित्य के क्षितिज का विस्तार
और खड़ी बोली हिन्दी की रचनात्मक संभावनाओं
को साकार करने की दृष्टि से द्विवेदी युग का
ऐतिहासिक और साहित्यिक महत्व है।

Scanned with CamScanner